ज्ञानगारी चतुर्दश

जिसको

पंडित पूरणमल मुदर्रिस

हल्काबंदी स्कूल चिरगाँव, परगना मोठ,
ज़िला झाँसी ने मुमुक्षुओं और भक्त-
जनों के विनोदार्थ बनाया।

छठी बार

लखनऊ

केसरीदास सेठ, सुपरिंटेंडेंट द्वारा,
नवलकिशोर-प्रेस में मुद्रित और प्रकाशित

सन् १९४० ई०

संशोधित संस्करण] [सर्वाधिकार सुरक्षित

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

श्रीगणेशाय नमः ।

ज्ञानगारी चतुर्दश

पहली गारी

सुनियो हो तुम जगके प्राणी नामरूप सब मानी बे ।
नामरूप की अकथ कहानी सबने कही बखानी बे १
नामरूप का भेद न जानो तासों फिरत दुखानी बे ।
जग-समुद्र में नामहिं नौका ताको तू बिसरानी बे २
नाम को करिया सतगुरु करले सोई पार लगानी बे ।
नाम विना कहिं नहिं निस्तारा कोटिन कही कहानी बे ३
नाम की महिमा संतन गाई पामर नाम भुलानी बे ।
बे जाने जो नाम लिया है तऊ सुगति दरशानी बे ४

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बड़े-बड़े पतितन को तारो रूप में रूप समानी बे ।
नारद व्यास सनक सनन्दन सबकी ऐसी बानी बे ५
दया धर्म की ढाल बाँधकर नाम तीर सर्रानी बे ।
पाप बली को ऐसा मारा आवागमन नशानी बे ६
जग का सब है थोथा धंधा क्यों मूरख उरझानी बे ।
पंडित पूरण ऐसी गाई नामहिं मुक्ति निशानी बे ७

दूसरी गारी

सुनियो हो नर चेतो क्यों नहिं जग का झूँठा नाता बे ।
भाई बंधु अरु कुटुँब कबीला कोई साथ नहिं जाता बे १
कौड़ी-कौड़ी माया जोड़ी ऊँचे महल उठाता बे ।
मेरी-मेरी कहकर धर गए भई संग नहिं साथा बे २
जठराग्नि में रक्षा कीन्ही ताको तू बिसराता बे ।
धिक् धिक् जीवन तेरा जग में मूरख क्यों न लजाता बे ३
ऋषि मुनियों ने बहुतक गाई तौ भी ध्यान न आता बे ।
मोह बली के फंदा परि गयो प्रभु की याद न करता बे ४
कामकला ने ऐसा बाँधा घर-घर लातें खाता बे ।
लोभ शूर ने बेड़ी डाली तासे निकस न पाता बे ५
सुनता है जब न्यूनता अपनी क्रोध भूत भर आता बे ।
चार भूत के फंदा फँस गयो जासे फिर जग आता बे ६
जन्म मरन का दुख है भारी क्यों नहिं लाज लजाता बे ।
पूरण है घट भीतर सबके बाहर कछू न पाता बे । ७

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तीसरी गारी

सुनियो हो तुम सतगुरुसंगी जग की मति बौरानी बे ।
ईश छोड़कर जीव कहाया क्यों मति तुव भरमानी बे १
सिंह सपूत छोड़ तू बाना गाड़र हो मिमियानी बे ।
जनम मरन का दुख तू भोगा चौरासी भरमानी बे २
चौरासी में अति दुख पाया क्यों नहिं लाज लजानी बे ।
द्वैताही में मूरख मरगये आतमरूप न जानी बे ३
कोइ हिंदू कोइ तुरक कहावे भेदवाद सब ठानी बे ।
अंतरधुनि की खबर न जानी ऊपर कथनी सानी बे ४
सतगुरु खोज ब्रह्म तुम चीन्हों नहिं तर फिर पछतानी बे ।
छिन छिन जीवन जात जगत में रहती नहीं निशानी बे ५
वृक्षा ऊपर वह तिरबेनी यही वेद की बानी बे ।
इड़ा पिंगला सुषमन उपजी शून्य ध्वजा फहरानी बे ६
दम पर दम तुम अजपा देखो अजपा अमर निशानी बे ।
पूरण है घटभीतर सबके बाहर कछू न जानी बे ७

चौथी गारी

तोहिं तन सारी कीने दई तुम सुनियो सुमति सयानी बे ।
सारी रँगे की खबर नहीं है तासे मति भरमानी बे १
रँगरेजा नहिं चीन्हों तुमने तासों रूप भुलानी बे ।
है ग़ाफ़िल कहँलौं समझाऊँ ममता मोह फँसानी बे २

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चटक मटक की छवि में फँसगई चौरासी फिर जानी बे।
जिन साहब का सकल पसारा उनको तू बिसरानी बे ३
शशा सींगवत सुख है जग का तामें तू भरमानी बे।
मानत है तू झूँठ सत्य कर ऐसी मति बौरानी बे ४
जिनको तूने संगी जाना संग न जात निशानी बे।
चेत चेतकर गुरु को चीन्हों नहिं तर जग फिर आनी बे ५
सतगुरु चीन्हें द्वैता मिटि है रूप में रूप समानी बे।
चिदानंद में बिंदु मिलावै ऐसी सैन लखानी बे ६
जनम जनम का तप है परगट ज्ञाननेत्र दरशानी बे।
पूरण है घट भीतर सबके बाहर कछू न जानी बे ७

पाँचवीं गारी

सुनियो हो तुम सुमति सयानी अपनी आदि भुलानी बे।
देह दिवालय आतम देवा तिन्ह तज क्यों भटकानी बे १
पंचतत्त्व का बना दिवाला जामें पुरुष समानी बे।
अगम अगोचर शिव तहँ भीतर वेद कही हम जानी बे २
जिसने खोजा तिसने पाया संतों की यह बानी बे।
दश घोड़े का रथ तू सजकर ज्ञान लगाम लगानी बे ३
मन मतंग को करौ सारथी गुरु से सीख सिखानी बे।
सुरत निरत से रथवश करके ज्ञानदशा चढ़ जानी बे ४
खेचर भूचर चाचरि उन्मुन इनको लै दरशानी बे।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

योग युगति से सबने पाया अलख रूप दिखलानी बे ५
निर्गुण सर्गुण नहिं कछु भेदा बार बीच उरझानी बे ।
ब्रह्मज्ञान से मिलता स्वामी निर्गुण सब गुणखानी बे ६
पूरी पूरी लगन लगावै आवागमन नशानी बे ।
पूरण है घट भीतर सबके बाहर कछू न जानी बे ७

छठवीं गारी

सुनियो हो कोइ गुरुमुख ज्ञानी ऋषिमुनियों की बानी बे ।
आदि अंत की खबर भूल गयो तासों फिर जग आनी बे १
जनम मरन का दुख है भाई क्यों मूरख उरझानी बे ।
जिन साहब का सकल पसारा उनको तैं बिसरानी बे २
नव द्वारे का बना पींजरा तामें फिर घुस जानी बे ।
मन को बसकर तनको कसकर ऐसी युगति मिलानी बे ३
गुरू शब्द का खड्ग पकड़कर ज्ञान-दीप दिखलानी बे ।
पाँच चोर घट भीतर देखे जिनमें ऐंचातानी बे ४
उनको वशकर आशा तजकर शील अंग चढ़ जानी बे ।
समता दृष्टि बर्तना करके कबहुँ हार ना मानी बे ५
गुरुबिनु भेद मिलै नहिं घट का तासे रूप भुलानी बे ।
साहब है निज घट के भीतर बाहर क्यों भटकानी बे ६
भूल मिटी जब आपा खोया मुक्तरूप दरशानी बे ।
पूरण है घट भीतर सबके बाहर कछू न जानी बे ७

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सातवीं गारी

सुनियो हो कोइ पूरे ज्ञानी अगम निगम की बानी बे ।
ईश्वर एक सत्य अज आतमज्ञानदशा दरशानी बे १
ज्ञान का दीपक हाथ में लेकर आवागमन नशानी बे ।
हिंदू ईश तुरक कहि अल्ला एकहि रूप बखानी बे २
सबका स्वामी एकहि जानो भेदवाद जिन ठानी बे ।
भेदवाद सब पामर जानैं जिनके ज्ञान न आनी बे ३
साहब सबका एकहि जानो एकम् एक बखानी बे ।
जिसकी जैसी लगन लगी है ईश्वर सब की जानी बे ४
बाहर भीतर ईश्वर देखे सो अमूर्ति पहिंचानी बे ।
घट-घट-वासी ईश्वर स्वामी संतों की यह बानी बे ५
निरलेप निरंजन सबमें रमता ज्ञानदशा दिखलानी बे ।
जीव जंतु चराचर जेते सबमें व्यापक जानी बे ३
आतम एक चराचर सब में ब्रह्मरूप पहिंचानी बे ।
पूरण है घट भीतर सबके बाहर कछू न जानी बे ७

आठवीं गारी

सुनियो हो नर देखो क्यों नहिं देही अजब ठिकाना बे ।
पंच तत्त्व का बना दिवाला जामें अलख समाना बे १
दशविधि बाजा अनहद डंका योग रीति से जाना बे ।
अजपा जाप होत है निशिदिन ताको कहौं बखाना बे २

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

इकिस सहस अरु छैसै ऊपर निशि दिन एक प्रमाना बे।
षट् चक्कर ता भीतर देखो तामें देव समाना बे २
ब्रह्मा विष्णु रुद्र सब देवा तिनका यही ठिकाना बे।
चक्र लौटकर भीतर देखो अद्भुत रूप दिखाना बे ४
तुरियातीत कहत हैं जासों अचल रूप निरबाना बे।
आतम को परमातम जानो दल सहस्र दरशाना बे ५
सिंधु में बिंदु मिला जबहीं तब आपहि आप कहाना बे।
आपहि आप दशों दिशि छाया आवागमन नशाना बे।
उन्मुन मिल परमातम देखा पायो आतमज्ञाना बे।
पूरण है घट भीतर सबके बाहर कछू न जाना बे ७

नवीं गारी

देखो हो नर चेतो क्यों नहिं आखिर सब मिट जाना बे।
बाप अजा परअजा चल गए ऐसे तुमको चलना बे १
आज करै सो अभी जु करले नातरु फिर पछताना बे।
धन दौलत अरु कुटुँब कबीला कोई संग नहिं चलना बे २
पाप पुण्य की शिरपर गठरी बीच में ऐंचाताना बे।
नेकी बदी जो ईश्वर देखे जिसको तू न भुलाना बे ३
नेकी बदी यहाँ रह तेरी और कछू नहिं रहना बे।
पाप-पुण्य है संगी तेरो जिसका बदला भरना बे ४
करने होय सो करले प्यारे नातरु फिर पछताना बे।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

छिन-छिन जीवन जात जगत में रहता नहीं निशाना बे ५
मेरा तेरा सब कुछ छोड़ा उतर गयो सब बाना बे।
माँझ महल से निकस चला जब ख़ाक में ख़ाक मिलाना बे ६
लेना होय सो ले ले बंदे नातरु कछू न पाना बे।
पूरण है घट भीतर सबके बाहर कछू न जाना बे ७

दशवीं गारी

सुनियो हो तुम गंगारामा मति तुम्हरी बौरानी बे।
खान पान के सुख में भूला जासे टेंटें ठानी बे १
मूरख तोहिं समुझायों बहुतक तौ भी कछू न जानी बे।
मोह झुंड में ऐसा फँसगयो घर की याद भुलानी बे २
मन मतंग के वश में पड़गयो जाते होत दुखानी बे।
चटक मटक के रँग में भूला बहुतक सुनी कहानी बे ३
लेना हो सो लेले तोते नातरु फिर पछतानी बे।
कील किवारियाँ भई सब ढीली पिंजरी भई पुरानी बे ४
पिंजर पाँतें हुमस चली हैं हो गयो ताकत हानी बे।
टूट पिंजरिया बहुदुख भोगा तो भी लाज न आनी बे ५
अंडे ते तोहिं सेकर पाला उसको तू बिसरानी बे।
टेंटें कर तू बाहर बोला माया कथनी सानी बे ६
बैरी बिल्ली ग्रसने चाहत समझत लाभ न हानी बे।
पूरण है घट भीतर सबके बाहर कछू न जानी बे ७

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ग्यारहवीं गारी

सुनियो हो तुम मेरे प्यारे बाग़ कबहुँ नहिं जाना बे।
पँचरँग बाग़ बना मालिक का जाय देख तुम आना बे १
नौ लौंगें करणी के वृक्षा जामें तू घुसजाना बे।
दया दाख अरु क्षमा छुहारे तत्त्व अतूत लगाना बे २
होश गुलाब चित्त चम्मेली फूल रही फुलवाना बे।
कर्म कियारी उसमें काटौ दुर्मत काग भगाना बे ३
मन माली को वशमें करके अद्भुतरूप दिखाना बे।
बाग़ लगा है काया भीतर जामें तू फिर आना बे ४
अद्भुत बाग़ बना मालिक का रँग में रंग मिलाना बे।
कर संयम की बारि बाग़ में तुमको आँच न आना बे ५
शील अंग से पानी डालो वृक्षा सूख न पाना बे।
भाव का भौंरा उसमें देखा ताको तू न उड़ाना बे ६
ऐसी रहनी रहै जो कोई सहज मुक्त हो जाना बे।
पूरण है घट भीतर सबके बाहर कछू न जाना बे ७

बारहवीं गारी

सुनियो हो बक चेतो क्यों नहिं हंसन की यह बानी बे।
हंसन ने बहुतक समझाए तुमने एक न मानी बे १
छोड़त नहिं तुम बानि आपनी विषको अमृत जानी बे।
माया मछरी पकरी तुमने हंस की राय भुलानी बे २

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

देश हंस को मानसरोवर उसको नहिं पहिंचानी बे।
ज्ञानरूप मुक्ताहल छोड़ो मछली विषय सुहानी बे ३
धिक् धिक् जीवन तेरा जग में हानि लाभ नहिं जानी बे।
चेत चेत बक चेत रे अंधा क्यों दुर्मति अस ठानी बे ४
देश ढूँढ़ले मानसरोवर छोड़ दे ताल तलानी बे।
अपनो रूप भूल यक फँस गये माया ध्यान लगानी बे ५
हिंसा तुमने बहुतक कीन्ही दया अंग नहिं आनी बे।
दया बिना बक थोथी करनी सुन हंसों की बानी बे ६
हंसा उड़ हंसन में मिलगये आवागमन नशानी बे।
पूरण है घट भीतर सबके बाहर कछू न जानी बे ७

तेरहवीं गारी

सुनियो हो नर मणि तू बाँधे गुरु बिन नहिं दिखलानी बे।
मोहजाल के भ्रम में पड़कर मणि अपनी नहिं जानी बे १
जब तक भूल मिटै नहिं तेरी निज मणि हाथ न आनी बे।
खाँड़ भरै भुस तूने खाया बिनु गुरु सीख सिखानी बे २
मृग के पास बसै कस्तूरी जानत नहिं अज्ञानी बे।
लाली देखो मेहँदी भीतर तेल तिली पहिंचानी बे ३
है सुगंध फूलों के अंदर पड़ती नहीं लखानी बे।
ऐसे साहब हैं घट भीतर गुरू ज्ञान से जानी बे ४
अपना साहब है घट भीतर ताकी सुधि बिसरानी बे।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दया धर्म की रहनी गहकर गुरु से सीख सिखानी बे ५
तेरा स्वामी है घट भीतर ज्ञान-नेत्र दरशानी बे।
बिनु गुरु वस्तु मिलै नहिं कबहूँ कोटिक सुनो कहानी बे ६
ज्ञान का दीपक कर में लेकर फिर घर में घुस जानी बे।
गंगा यमुना मध्य सरस्वति हरियल रंग मिलानी बे ७
मरन जियन की दुबिधा मिटगई तिनका ओट दिखानी बे।
पूरण है घट भीतर सबके बाहर कछू न जानी बे ८

चौदहवीं गारी

सुनियो हो तुम मेरे हेती आदि अंत नहिं जाना बे।
निर्गुण ब्रह्म वेद यश गायो ताहि चित्त में आना बे १
महावाक्य द्वादश वेदन के आतमरूप बखाना बे।
ईश जीव की करौ एकता महावाक्य में आना बे २
अलख अगोचर प्रभु तो भीतर तुरिया मिल दरशाना बे।
तुरिया मिलकर उन्मुन खेला जीव ब्रह्म होजाना बे ३
ज्ञान ध्यान से भीतर घुसकर जीवनमुक्त कहाना बे।
शुद्ध स्वरूप आतमा घट में वेद कहत हम जाना बे ४
ईश्वर तेरा है घट माहीं बाहर क्यों भटकाना बे।
मेरा-तेरा छोड़ दे बंदे कोइ संग नहिं जाना बे ५
लगन लगा ले दिल के भीतर नातरु फिर पछताना बे।
पाप-पुण्य है तेरा साथी आखिर को मिटजाना बे ६

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

आतम चीन्हौं दुबिधा मिटि है रूप में रूप मिलाना बे।
पूरण है घट भीतर सब के बाहर कछू न जाना बे ७

इति चतुर्दशज्ञानगारी सम्पूर्णा।

अष्टपदी

प० टेक—जा मन मन में भूल पड़ी है आन।
काम क्रोध के वश में भूलौ चौरासी भरमान।
लोभ मोह के फंदा फँसगयो जासे निकस न पान १
जिनको तूने साथी जाना साथ न जात निशान।
उलटा चलता उलटा बोले उलटा जग में आन २
पोथी पुरान सुने नहिं कबहूँ नाच रंग मन मान।
चौरासी में अति दुख पाया तौ भी शरम न खान ३
जिन साहब का सकल पसारा उनको तू बिसरान।
कह पूरण जो तेरा स्वामी उसकी कर पहिंचान ४

दू० टेक—जा मन की भूल कबहुँ नहिं जाय।
देखत सुनत विचारत यह मन तौ भी धोखा खाय।
जग-समुद्र में ऐसा भूला फिर फिर गोता खाय १
मरन जियन की याद भूल गयो जासे फिर जग आय।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तेरा स्वामी है घट भीतर ताको तू बिसराय २
गर्भवास को त्रास भूल गयो क्यों नहीं नीच लजाय।
मेरी तेरी छोड़ दे मूरख नातरु फिर पछताय ३
निशि वासर तू भ्रमत फिरत है कबहूँ हार न पाय।
कह पूरण जो तेरा स्वामी उसकी शरणै जाय ४

ती० टेक—करो मन चलने की तदबीर।

पिंजर तेरा हुआ पुराना काल मारि है तीर।
जिसको तैंने अमृत समझा यम की परि है भीर १
काल किवरियाँ भईं सब ढीली नैनन टपके नीर।
पातें तेरी हुमस चली हैं झीना पड़ गया चीर २
गति तेरी है चंचल मनुवाँ नेक न धरता धीर।
स्वामी तेरा है घट भीतर वही मेटि है पीर ३
दश घोड़ों को वश में करके चीन्हों आतम वीर।
कह पूरण जो आतम चीन्हें वही जगत में मीर ४

चौ० टेक—या मन को झूठ सकल ब्योपार।

काम कला के फंदा परकर तकत फिरत परनार।
चटक मटक की छवि में भूला फँस गयो कामिनिजार १
बालापन तुने खेल गँवाया कुछ नहिं जाना सार।
आई जवानी मस्त हुआ है करता नहीं सँभार २

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

वृद्धापन जब आया तेरा हेल मेल भयो छार।
इंद्री शिथिल भई सब तेरी मिटिगो सकल ब्योहार ३
लोग कुटुँब सब दुश्मन हो गये अब शिर दैदै मार।
कह पूरण तू मनुवाँ मेरे आतम चीन्हों सार ४

पां० टेक—या मन की चंचलता नहिं जाय।

देखत सुनत विचारत यह मन तौ भी गोता खाय।
मरन जियन को कष्ट भूल गयो तासों फिर जग आय १
खान पियन के सुख में भूला तिरिया से मुसकाय।
तिरिया में मन ऐसा फँसगयो घर घर लातें खाय २
मात पिता सब दुश्मन हो गये नारी लै भग जाय।
नारी में मन ऐसा मोहा तासें निकस न पाय ३
चंचलता तू छोड़के मनुवाँ हरि का ध्यान लगाय।
कह पूरण तू मनुवाँ मेरे आतम चीन्हों जाय ४

छ० टेक—या मनने कबहुँ न कीन विचार।

सारासार विचार न कीन्हों फँस गयो मायाजार।
बुरी घरी जब इस पर बीती तब शिर दै दै मार १
सुन्न भीत पर चित्र लिखत है जामें कुछ नहिं सार।
अपनी प्रभुता निशिदिन चाहै घूमें बारम्बार २
निर्बल देखिकै द्वंद्व मचावें लाखों देवें गार।
सबल देखि चुपके होजावें ऐसा नीच गँवार ३

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अपने मुख ते अपनी अस्तुति निशिदिन करत अपार।
कह पूरण तू मनुवाँ मेरे चीन्हों आतम-सार ४

सा० टेक—या मन को ज्ञान ध्यान में लाय।

जैसी संगति मनुवाँ पावे वैसी में धस जाय।
संगति जाको उड़कर लागै सौ सौ कसमैं खाय १
भली बुरी जब इस पर बीतै पाछे को पछताय।
दश सखियों के रंग में भूला घर घर में घुसजाय २
पवन से वेग चलै जो मनुवाँ बिन देखे सब खाय।
कोइ कोइ साधू सती शूरमा इसको नाच नचाय ३
ज्ञान लगाम लगाकर इसको भीतर को घुस जाय।
कह पूरण तू मनुवाँ मेरे सहज भक्त हो जाय ४

आ० टेक—या मन की लाज शरम गई छूट।

नारी में नर ऐसा मोहा सबमें पारै फूट।
लालच में मन ऐसा भूला निशि दिन बोलत झूठ १
अरबन खरबन बहुतक जोड़े तउ खाली रहि मूठ।
दौड़त दौड़त ऐसा दौड़ा भ्रमत फिरत चहुँ खूंट २
ऐसा अवसर चूका जाता लूटत बने सो लूट।
काल बली जब फंदा डाले धर शिर मारे कूट ३

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

माँझ महल से निकस चलो जब सब से नाता टूट।
कह पूरण तू मनुवाँ मेरे देखो राम अटूट ४

इत्यष्टपदी सम्पूर्णा

बलवंत-नग्र स्थान है, जन्मभूमि सो जान।
झांसी जासों कहत हैं, आतमज्ञान बखान॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

संगीत-राग-भजन आदि संबंधी पुस्तकें

श्रीकृष्ण-गीतावली	।)	आनंद-सागर (१-२ भाग)	१=)
काशी भजनावली	-)॥	प्रेम-रत्न	=)॥
ख़्यालात मातादीन	≡)	भक्त-रसनामृत	-)
गोपीचंद भरथरी	-)	जानकीचरणचामर	=)॥
चौताल रसिक-मनहरण (पाँचो भाग)	।)॥	धर्म-प्रेम-तरंग	।)
चुरिहारिन लीला	)॥।	नवीन गज़ल-संग्रह	=)॥
अपूर्व भजन-लता	-)॥	नवरत्नभाष्य वृंदावन-विलास	≡)
आनंद-लहरी	)॥।	धर्मोपदेश	=)
अनुरागरस	)॥।	प्राविट्-प्रिया	-)।
अर्ज़-पत्रिका	=)	प्रेमावली	-)।
अष्टयाम	।)	प्रेम-प्रकाश	-)॥
छंद-प्रकाश	।)	प्रेम-रसामृत	-)
भजन-रामायण	-)॥	सती-विलास	=)
भजन-प्रभाती	-)॥।	मन-मोहिनी	।=)॥
भजन-रत्नाकर	-)॥	भजन-विनय-पच्चीसी	-)।
भजन-माला	-)।	भजन-संग्रह	≡)

नोट—अन्यान्य पुस्तकों के लिए-)का टिकट भेजकर बड़ा सूचीपत्र मुफ़्त मँगाइए।

मिलने का पता—

मैनेजर, नवलकिशोर-प्रेस, (बुकडिपो)

हज़रतगंज, लखनऊ.

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor